MP Board Class 7th Notes Sanskrit Chapter 1 चत्वारि धामानि

चत्वारि धामानि हिन्दी अनुवाद

शिक्षिका :
भारति! भवती जानाति किं कः अयं महापुरुषः?

भारती :
आर्ये! अयं खलु जगद्गुरु शङ्कराचार्यः।

महेश: :
आम् अहमपि जानामि एते किल तस्य चत्वारः शिष्याः।

देवेशः :
शङ्कराचार्यस्य प्रथमशिष्यस्य नाम सुरेश्वराचार्यः इति।

शिक्षिका :
देवेशः! अन्येषां त्रयाणां शिष्याणां नामानि कानि?

देवेशः :
अहं न जानामि।

शारदा :
द्वितीयः शिष्यः हस्तामलकः तृतीयः शिष्यः त्रोटकाचार्यः चतुर्थः शिष्य पद्मपादः।

अनुवाद :
शिक्षिका-हे भारती! क्या तुम जानती हो कि यह महानुभाव कौन हैं?

भारती :
आर्ये! यह जगद्गुरु शंकराचार्य हैं। महेश-हाँ, मैं भी इन्हें
जानता हूँ कि उनके चार शिष्य थे।

देवेश :
शंकराचार्य के पहले शिष्य का नाम सुरेश्वराचार्य था।

शिक्षिका :
देवेश! अन्य तीन शिष्यों के क्या-क्या नाम हैं? देवेश-मैं नहीं जानता हूँ।

शारदा :
दूसरे शिष्य हस्तामलक, तीसरे शिष्य त्रोटकाचार्य (और) चौथे शिष्य पद्मपाद थे।

शिक्षिका :
साधु, अपि जानान्ति शङ्करमठानि?

सर्वे :
न जानीमः।

शिक्षिका :
शङ्कराचार्येण चतुर्षु स्थानेषु चतसृषु दिक्षु चत्वारि मठानि स्थापितानि। तानि चत्वारि पवित्रधामानि इति प्रसिद्धानि।

महेशः :
आर्ये! उत्तरदिशि बदरीनाथः, दक्षिणदिशि रामेश्वरं, पश्चिमदिशि द्वारका, पूर्वदिशि जगन्नाथपुरी इति किल चत्वारि धामानि।

शिक्षिका :
सत्यम्! किन्तु धर्मप्रचाराय शङ्कराचार्येण स्थापितानि मठानि अपि चत्वारि धामानि इति प्रसिद्धानि। तानि चतस्तृषु दिक्षु सन्ति।

भारती :
तानि धामानि कानि?

शिक्षिका :
शृङ्गेरिमठम्, गोवर्धनमठम्, शारदामठम्, ज्योतिर्मठम्।

देवेशः :
कस्यां कस्यां दिशि सन्ति?

अनुवाद :
शिक्षिका-ठीक है, क्या शंकर के मठों को भी जानते हो?

सभी :
नहीं जानते हैं।

शिक्षिका :
शंकराचार्य के द्वारा चार स्थानों पर चारों दिशाओं में चार मठों की स्थापना की गई थी। वे चारों पवित्र धाम हैं, इस रूप में प्रसिद्ध हैं।

महेश :
आर्ये! उत्तर दिशा में बदरीनाथ, दक्षिण दिशा में रामेश्वर, पश्चिम दिशा में द्वारका (तथा) पूर्व दिशा में जगन्नाथपुरी- इस प्रकार ये चार धाम हैं।

शिक्षिका :
ठीक! किन्तु धर्म के प्रचार के लिए शंकराचार्य के द्वारा स्थापित किये गये मठ ही चार धाम हैं; ऐसा प्रसिद्ध है। वे चारों दिशाओं में हैं।

https://www.evidyarthi.in/

भारती :
वे धाम कौन-कौन से हैं?

शिक्षिका :
शृङ्गेरिमठ, गोवर्धनमठ, शारदामठ (तथा) ज्योतिर्मठ।

देवेश :
(ये) किस-किस दिशा में हैं?

शिक्षिका :
पश्यन्तु इदं कोष्ठकं, स्पष्टं भवति

दक्षिणदिशि	पूर्वदिशि	पश्चिमदिशि	उत्तरदिशि
शृङ्गेरिमठम्	गोवर्धनमठम्	शारदामठम्	ज्योतिर्मठम्
शृङ्गेरी	जगन्नाथपुरी	द्वारका	बदरीनाथः
कर्णाटकराज्ये	उडीसाराज्ये	गुजरातराज्ये	उत्तराञ्चलराज्ये

शिक्षिका :
धर्म एव भारतस्य एकतायाः मूलाधारः। 'धर्मो रक्षति रक्षितः' अतः धर्मरक्षणेन एव भारतम् संरक्षितं भवति। धर्मरक्षणार्थं वेदान्ततत्वानां प्रचारार्थम् एतानि मठानि स्थापितानि। मठानां स्थापकं जगद्गुरुम् आदिशङ्करं स्मरामः।

"श्रुतिस्मृतिपुराणानाम् आलयं करुणालयम्।
नमामि भगवत्पादशङ्करं लोकशङ्करम्॥"

अनुवाद :
शिक्षिका-इस कोष्ठक को देखो (इससे) स्पष्ट होता है-

दक्षिणदिशि में	पूर्वदिशि में	पश्चिमदिशि में	उत्तरदिशि में
शृङ्गेरिमठ	गोवर्धनमठ	शारदामठ	ज्योतिर्मठ
शृङ्गेरी	जगन्नाथपुरी	द्वारका	बदरीनाथ
कर्नाटक	उड़ीसा	गुजरात	उत्तराञ्चल
राज्य में	राज्य में	राज्य में	राज्य में

शिक्षिका :
धर्म ही भारत की एकता का मूल आधार है। '(धर्म की) रक्षा करने वाले की धर्म रक्षा करता है।' इसलिए धर्म की रक्षा करने से ही भारत भली प्रकार से रक्षित होता है। धर्म की रक्षा के लिए और वेदान्त के तत्वों के प्रचार के लिए इन मठों की स्थापना की गई है। मठों की स्थापना करने वाले जगद्गुरु आदिशङ्कर का (हम) स्मरण करते हैं।

"वेद, स्मृति और पुराणों के स्थान करुणानिधान और संसार का कल्याण करने वाले भगवान शंकर के चरणों की मैं वन्दना करता हूँ।"

चत्वारि धामानि शब्दार्थाः

चत्वारः = चार (पुल्लिङ्ग)। धर्मप्रचाराय = धर्म के प्रचार के लिए। धर्मरक्षणेन = धर्मरक्षा से।

https://www.evidyarthi.in/